ज्ञान यज्ञ परिवार का वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

ज्ञान यज्ञ परिवार का वार्षिक सम्मेलन एक जनवरी दो हजार ग्यारह को सम्पन्न हुआ। इसके पहले परिवार के संरक्षक बजरंग मुनि जी के नेतृत्व में प्रयोग क्षेत्र रामानुजगंज के आस पास के एक सौ तीस गावों की यात्रा की गई तथा नई समाज रचना का संदेश दिया गया।

सबसे पहले गायत्री परिवार तथा आर्य समाज के लोगों ने मिलकर यज्ञ किया। यज्ञ में बाहर के आये हुए विद्वान भी शामिल हुए। यज्ञ आधे घंटे का हुआ। यज्ञ पश्चात् ज्ञान यज्ञ परिवार का प्रतीक ध्वज जिसका रंग केसरिया, जिसके बीच में सुदर्शन चक्र की आकृति और उस आकृति के बीच में ज्ञान लिखा हुआ है, उक्त ध्वजारोहण हमारे प्रयोग क्षेत्र के अध्यक्ष अवधेश गुप्त अधिवक्ता द्वारा सम्पन्न कराया गया। ध्वज प्रणाम ध्वज वंदना की गई जो इस प्रकार थी "हे प्रभों, आप मुझे शक्ति दो कि मैं दूसरों को अपनी इच्छानुसार संचालित करने की इच्छा या दूसरों की इच्छा अनुसार संचालित होने की मजबूरी से दूर रह सकूॅ। यदि ऐसा न हो तो सबको सहमत कर सकूॅ और यदि फिर भी ऐसा न हो सके तो ऐसी इच्छाओं का अहिंसक प्रतिरोध करूॅ"। ध्वज वंदना में सभी स्थानीय तथा बाहर के आये हुए विद्वानों ने भाग लिया तथा ध्वज वंदना के शब्दों और भावों की भूरि भूरि प्रशंसा की।

उसके बाद स्वागत गीत अध्यक्ष अवधेश गुप्त जी ने रखा तथा मुनि जी ने बयालीस दिनों की यात्रा में दिया गया भाषण और उसका विवरण बताया। मुनि जी द्वारा गांवों में दिये गये भाषण की पुस्तक ज्ञान तत्व दो सौ चौदह के रूप में पूर्व में ही सदस्यों को प्राप्त थी इसलिये भाषण के साथ साथ उसका उद्देश्य और विवरण महत्वपूर्ण था। मुनि जी ने बताया कि "इस पूरी बयालीस दिनों की यात्रा का उद्देश्य नई समाज रचना का सूत्रपात एक सौ तीस गांवों से करना था। मैं इस निष्कर्ष तक पहुॅचा था कि राजनीति लगातार समाज को गुलाम बनाने की दिशा में सफलता पूर्वक बढ़ रही है। रोज नये नये कानून बना बनाकर समाज पर थोपे जा रहे हैं। तंत्र संचालक और लोक संचालित की दिशा में बढ़ रहे हैं। समाज को परिवार, गॉव, जिला, प्रदेश, राज्य समाज, के क्रम से हटाकर, परिवार जाति, वर्ग, धर्म, राष्ट्र विश्व के क्रम की ओर ढकेला जा रहा है। दूसरे क्रम को बढ़ाया जा रहा है और पहले क्रम को कमजोर किया जा रहा है। न परिवार स्वतः टूट रहे हैं न समाज। बल्कि राजनीति अपने राजनैतिक स्वार्थो के कारण परिवार गांव तथा समाज व्यवस्था को योजना पूर्वक तोड़ रही है। इस प्रयत्न के परिणाम स्वरूप ही जातिवाद साम्प्रदायिकता लगातार बढ़ रही हैं। कानूनों की अधिकता भ्रष्टाचार को बढ़ाने में भी लगातार सक्रिय हैं। ये सभी दुष्परिणाम राजनैतिक दलों द्वारा बुरी नीयत से समाज को गुलाम बनाकर रखने की योजना के दुष्परिणाम हैं न कि समाज में व्याप्त कोई भूल। किन्तु हमारे राजनेताओं ने बड़ी चालाकी से इन सब दुष्परिणामों का दोष भी समाज पर ही डाल दिया। हर नेता दिन रात प्रचारित करता है कि इसके लिये समाज ही दोषी है जबकि समाज का इसमें कोई दोष न होकर उसकी तो मजबूरी है क्योंकि राज्य संचालक है और समाज संचालित।

ऐसे अवसर पर धर्म गुरूओं से उम्मीद थी कि वे व्यक्ति और समाज का मार्ग दर्शन करेंगे किन्तु उन्होंने तो उल्टा राग छेड़ दिया। धर्म गुरूओं ने भी व्यक्ति और समाज को ही दोषी बताना शुरू कर दिया। धर्म गुरूओं का कर्तव्य था कि वे व्यक्ति के व्यक्तिगत आचरण में गुणों के विकास के साथ साथ राजनैतिक षड़यंत्रों की भी पोल खोलते किन्तु धर्म के नाम पर धीरे–धीरे संगठन बनने लगे और धर्म का वास्तविक स्वरूप ही बदल कर संप्रदाय बनता चला गया। ये संप्रदाय आपस में टकराने लगे तथा राजनीति इन टकरावों को हवा देने लगी। व्यक्ति का नैतिक पतन होते चला गया। राष्ट्र भौतिक उन्नति की दिशा में तीव्र गति से बढ़ता गया किन्तु नैतिक पतन की दिशा में भी लगातार बढ़ता जा रहा है। भ्रष्टाचार चरम पर हैं। हमारे अनके धर्म गुरू तो भ्रष्टाचार को अपनी राजनैतिक इच्छा पूर्ति का अच्छा अवसर मानकर राजनीति

के दलदल में कूदने के लिये भी व्यग्र हैं जबकि इसके पूर्व संघ परिवार भी ऐसे ही दलदल में फंस कर स्वयं को उलझा चुका है और जय गुरूदेव भी उसका स्वाद चखते हुए ही देखें जा सकते हैं।

मैंने रामानुजगंज शहर में सामाजिक एकता के प्रयोग और उसके परिणामों की सफलता के बाद देश भर में घूम घूम कर नई समाज रचना ही आवश्यकता समझाने की कोशिश की। समाज के लोग तो इस बात को समझे किन्तु राजनैतिक नेताओं और धार्मिक संगठनों के नेताओं को ऐसी सामाजिक पहल से अपने अस्तित्व पर खतरा दिखने लगा। परिणाम स्वरूप पुनः रामानुजगंज को ही केन्द्र बनाकर नई समाज रचना का कार्य प्रारंभ हुआ। 25 दिसंबर दो हजार नौ से इस नई समाज संरचना की विविधत् नींव रखी गई जिसमें रामानुजगंज शहर को केन्द्र बनाया गया। यहॉ नगर प्रमुख का चुनाव करके एक पंद्रह सदस्यीय समिति बनी। नगर प्रमुख को शहर के सबसे सम्मानित व्यक्ति के रूप में चुना गया और पंद्रह की समिति को शहर की सामाजिक एकता को मजबूत करने का काम दिया गया। साम्प्रदायिक संगठनों में भी विभाजन हुआ। हिन्दुओं और मुसलमानों के साम्प्रदायिक तत्व अल्प संख्या में होते हुए भी संगठित थे। उनमें से एक को इरान आदि से तथा दूसरे को नागपुर से सीधे आदेश मिलते रहे। दोनों में विभाजन हुआ। साम्प्रदायिक हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने अलग अलग गुट बनाकर रामानुजगंज शहर को हिन्दू मुसलमान के बीच झोंकने की भरसक कोशिश की किन्तु सफल नहीं हुए। यह पहला मौका था जब बिना सरकारी हस्तक्षेप के ही हिन्दुओं और मुसलमानों ने आपस में टकराने से इन्कार कर दिया और साम्प्रदायिक संगठनों की योजना असफल हो गई।

मैंने दो हजार दस में एक सौ तीस गांवों तक समाज सशक्तिकरण योजना के विस्तार की योजना बनाई। प्रारंभ में संचालन का दायित्व लोक स्वराज्य संघ के केशव चौबे जी ने स्वीकार किया किन्तु उनकी गति बहुत धीमी होने से अगस्त दो हजार दस से ज्ञान यज्ञ परिवार ने सक्रिय होने का निर्णय किया और बारह नवंबर से चौदह दिसम्बर तक एक सौ तीस गावों में चौसठ स्थानों पर सभाऍ की। सभा का मुख्य उद्देश्य नई समाज **रचना अर्थात समाज सशक्तिकरण था। गावों में यह समझाया गया कि जाति वर्ण धर्म राष्ट्र के नाम पर बनने वाले संगठन समाज को जोड़ने की अपेक्षा तोड़ने का काम ज्यादा कर रहे हैं। सभी प्रकार के आरक्षणों ने जातीय धार्मिक टकरावों को बढ़ाया ही हैं। आरक्षणों के द्वारा वर्ग विद्वेष बढ़ा। स्वतंत्रता के बाद यदि जातीय धार्मिक कानून नहीं बने होते तो जातीय धार्मिक विषमता स्वतः ही कम हो गई होती। इन कानूनों ने समाज को तो तोड़ा ही, साथ ही विभिन्न वर्गो के धूर्त लोगों को आगे आने में भी मदद की जिसका परिणाम यह हुआ कि शराफत कमजोर होती चली गई जबकि हमारा उद्देश्य शराफत को मजबूत करना था। एक सौ तीस गांवों में घूम घूम कर यह संदेश दिया गया कि वर्ग निर्माण व वर्ग विद्वेष की जगह वर्ग समन्वय होना चाहिये, राज्य को सुरक्षा और न्याय के प्रति अधिक सक्रिय होना चाहिये जिससे सामाजिक हिंसा की भावना कम हो, भ्रष्टाचार रूके जिसकी शुरूआत ग्राम व्यवस्था से हो तथा अर्थ व्यवस्था में बदलाव हो कि ग्राम व्यवस्था को आर्थिक स्वायत्तता मिले।**

गांवों में हमारे भाषणों का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखा। हमने गावों में समझाया कि शराफत को मजबूत करना हमारा पहला उद्देश्य है। आज समाज में या तो राजनैतिक शक्ति को सर्वोच्च सम्मान प्राप्त है या धनवान को। शराफत सम्मान का आधार नहीं है। हम हर गांव में एक ग्राम प्रमुख का चयन कर रहे हैं जो हमारे गांव का सर्व सम्मत सर्वोच्च भला आदमी होगा। इस व्यक्ति को हम ग्राम देवता भी कह सकते हैं। यह ग्राम देवता न स्वयं कोई चुनाव लड़ेगा न ही किसी चुनाव में किसी का पक्ष लेगा। ग्राम देवता की भूमिका राष्ट्रपति के समान होगी। ग्राम देवता के दरवाजे पर गांव के लोग मिलकर उसकी पहचान के लिये एक ज्ञान ध्वज गाड़ देंगे।

यह ध्वज ही उस गांव के ग्राम देवता की पहचान होगा। ग्राम देवता का कोई काम या सक्रियता नहीं होगी। यह पद तो सिर्फ सम्मान के प्रतीक स्वरूप ही रहेगा।

प्रत्येक गांव में पंच सरपंच सचिव के भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिये न्यूनतम पंद्रह लोगों की एक कमेटी बनाई ंइे जिसे लोक पंचायत का नाम दिया गया। इस लोक पंचायत में ऐसे लोगों को चुना गया जो भ्रष्टाचार रोकने में सक्षम हों। ये लोग ग्राम सभा की बैठक में आम लोगों को उपस्थित करायेंगे तथा बैठक में गलत प्रस्ताव पारित नहीं होने देंगे। लोक पंचायत सरकारी पंचायत पर पहरेदार का काम करेगी। इस लोक पंचातय में कोई आरक्षण नहीं होगा। यहॉ तक कि शराफत भी आवश्यक नहीं है क्योंकि लोक पंचायत का कार्य सकारात्मक क्रिया न होकर निषेधात्मक मात्र है। इस लोक पंचायत को कोई अधिकार प्राप्त नहीं। अतः कोई भी और कैसा भी व्यक्ति इसमें हो सकता है। यदि चालाक हो तो ज्यादा अच्छा होगा।

इस तरह हमने प्रत्येक गांव में दो चुनाव किये (1) ग्राम देवता का चयन (2) लोक पंचायत का गठन। हमारे प्रयत्नों का तुरंत प्रभाव हुआ कि (1) दोलंगी गांव में अधिकांश आबादी मुसलमान होते हुए भी उन्होंने एक हिन्दू को ग्राम देवता चुन लिया दूसरी ओर बसेरा गांव की पूरी आबादी हिन्दू की हैं वहॉ सिर्फ एक ही परिवार मुसलमान हैं किन्तु गांव वालों ने उस मुसलमान को ही ग्राम देवता चुन लिया। शाम को कुछ कट्टरवादी हिन्दुओं ने गांव के लोगों को भड़काना शुरू किया लेकिन गांव वाले उनसे सहमत नहीं हुए। इस तरह साम्प्रदायिक आग भड़काने वाले सफल नहीं हो सकें (2) लोक पंचायत के गठन का तात्कालिक प्रभाव हुआ कि भ्रष्टाचार करने वालों में हड़कम्प मच गया। लोक पंचायत का गठन भ्रष्टाचार के लिए पहली बार एक खुली चुनौती के रूप में सामने आया। इससे धूर्त और भ्रष्ट नेता चिन्तित दिखे। यह हमारी पहली सफलता रही।

हमने गांव गांव में लोगों को समझाया कि वे हिंसा की भावना को छोड़ दें। हम ग्राम सभाओं को ज्यादा से ज्यादा अधिकार दिलाने की लड़ाई दिल्ली से जारी रख रहे हैं। गांव के लोग संगठित हों जिससे उन अधिकारों का दुरूपयोग न हो। एक सौ तीस गांवों में दिया गया हमारा संदेश स्पष्ट था कि हम शराफत मजबूत करना चाहते हैं, समाज को मालिक और राज्य को मैनेजर बनाना चाहते हैं, जाति धर्म लिंग की समाज तोड़क योजनाओं को विफल करना चाहते हैं, भ्रष्टाचार की रोकथाम गांव से शुरू करना चाहते हैं तथा हिंसा की भावना को निकालना चाहते है। हम गांव गांव में अपना संदेश देने में सफल रहे।

मेरे भाषण के बाद खुली चर्चा शुरू हुई। सबसे पहला और गंभीर प्रश्न हमारे सर्वोदयी गांधीवादी मित्रों ने उठाया कि लोक पंचायत में धूर्त या अपराधी प्रवृत्ति के लोगों का प्रवेश वर्जित होना चाहिये था किन्तु यात्रा में कहा गया कि लोक पंचायत में सक्षम और चालाक लोगों को प्राथमिकता मिलनी चाहिये। यह तो उद्देश्य के विपरीत होगा। मैंने उत्तर दिया कि कांटे से कांटा निकालना हमारी मजबूरी है। शराफत कमजोर है और लगातार हो रही है। ऐसे समय में भ्रष्टाचार कर रहे और भष्टाचार करने की इच्छा रखने वालों को दो गुटों में बांटकर टकराव पैदा करना ही मार्ग है। हम लोक पंचायत को किसी भी रूप में कोई अधिकार सम्पन्न इकाई नहीं बना रहे। गांधी जी ने भी स्वतंत्रता संघर्ष में कहीं नहीं कहा कि सिर्फ शरीफ लोग ही आंदोलन में शामिल हों। जब सक्रियता और अधिकारों की बात आयेगी तब गुणात्मक समीक्षा की जायेगी। अभी तो संघर्ष ही हमारी अन्तिम सीमा है। उसमें भ्रष्टाचार रोकना है तथा तंत्र द्वारा लोक को गुलाम बनाकर रखने की ताकत को कमजोर करना है। अतः किसी भी रूप में लोक

पंचायत में गुणात्मक समीक्षा घातक होगी। यदि कोई हारा हुआ सरपंच भी हो या कोई भ्रष्ट से भ्रष्ट व्यक्ति भी हो और वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था के विरूद्ध सक्रिय हो तो उसे शामिल करना चाहिये। क्योंकि शत्रु का शत्रु अल्प काल के लिये मित्र बन जाता है।

दूसरा प्रश्न उठा कि लोक पंचायत में आरक्षण नहीं होने से महिलाएं या अन्य कमजोर वर्गो का प्रतिनिधित्व कैसे होगा तो मैंने पूछा कि जो महिलाएँ पुरूषों से ज्यादा संघर्षशील होगी उन्हें आगे आने में कोई रोक नहीं है। हम महिला पुरूष आदिवासी गैर आदिवासी का संगठन न बनाकर भ्रष्टाचार और राजनैतिक गुलामी से लड़ने वाली अहिंसक फौज बना रहे हैं। इसमें कोई भी मरियल व्यक्ति शामिल नहीं होना चाहिये। यहॉ तक कि ग्राम देवता भी नहीं। क्योंकि ग्राम देवता इस लड़ाई को शक्ति देने की क्षमता नहीं रखता। खुली चर्चा में और भी कई प्रश्न उठे जिनका मैने उत्तर दिया। अन्त में सर्व सम्मति से इस योजना को स्वीकार किया गया।

छब्बीस सत्ताइस और अठाइस तारीख के कार्यक्रम विचार मंथन तक सीमित थे। विचार मंथन के कार्यक्रम ग्लोब के माल्यार्पण से शुरू होते रहे हैं। इसमें न कोई वक्ता होता है न श्रोता। इसमें सबकों बोलने और सुनने की समान स्वतंत्रता होती है। विचार मंथन में कोई भी एक व्यक्ति एक विषय का संचालन करता है। विचार मंथन के निष्कर्ष विचार मंथन तक ही सीमित होते हैं, किसी योजना के भाग नहीं बनते। विचार मंथन में रखे जाने वाले विचार व्यक्तिगत होते हैं संस्था गत नहीं। पचीस तारीख को रखे गये विचार ज्ञान यज्ञ परिवार के थे न कि व्यक्तिगत। किन्तु छब्बीस सताइस अठाइस तारीख के सबके विचार व्यक्तिगत थे। यही कारण है कि यह चर्चा गोलमेज हुई तथा ग्लोब के माल्यार्पण से शुरू हुई। प्रतिदिन मैंने प्रारंभ में विषय की प्रस्तावना रखी और उसके बाद खुली चर्चा हुई।तीन दिनों की चर्चा के लिए मैंने 11 प्रस्ताव रखे जो इस प्रकार हैः—

01. भारत की सभी समस्याओं के समाधान का पहला सूत्र लोकतंत्र को लोक स्वराज्य प्रणाली में बदलना ही है। जिसका अर्थ है लोक नियुक्त तंत्र को लोक नियंत्रित तंत्र में बदलना।
02. लोक स्वराज्य के लिये ग्राम सभा सशक्तिकरण उचित मार्ग है जिसका अर्थ है ग्राम संसद की स्थापना।
03. ग्राम सभाओं को विधायी अधिकार दिये जावें।
04. भारतीय राजनीति में उसी दल का समर्थन सहयोग करे जिसकी पहली प्राथमिकता लोक स्वराज्य हो।
05. वर्तमान राजनैतिक वातावरण में हम मनमोहन सिंह, सोनिया गांधी, चिदम्बरम् , नितिश कुमार, नरेन्द्र मोदी, बुद्धदेव भट्टाचार्य, अच्युतानन्दन, रमणसिंह, शिवराज सिंह, शीला दीक्षित, शान्ताकुमार, बाबूलाल मरांडी, नवीन पटनायक, जैसे लोगों को प्रोत्साहित करे, तथा लालू यादव , रामबिलास पासवान, मायावती, शिबु सोरेन, ममता बनर्जी, अजीत जोगी, प्रकाश करात, करूणानिधि, जयललिता, स्वामी अग्निवेष जैसे को निरूत्साहित । अन्य राजनेताओं की गुण—दोष के आधार पर समीक्षा करें।
06. भारतीय संवैधानिक व्यवस्था में स्वतंत्र अर्थपालिका हो जिसका अर्थ है, अर्थपालिका को न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका के समान स्वतंत्रता देना।

07. वर्तमान वातावरण में भारत के प्रत्येक व्यक्ति को न्युनतम दो हजार रूपया मासिक जीवन भत्ता दिया जाना चाहिये। उपरोक्त राशि के लिये कृत्रिम उर्जा (डीजल, पेट्रोल, बिजली, गैस, मिट्टी तेल, कोयला) की बहुत भारी मुल्य वृद्धि करें। जीवन भत्ते की शुरूआत गरीबी रेखा के नीचे के परिवारों से की जा सकती है। अन्य प्रकार की सब्सीडी समाप्त कर दी जाये।
08. भारतीय संवैधानिक व्यवस्था में समान नागरिक संहिता लागू की जाये।
09. धर्म,जाति, भाषा, क्षेत्रीयता, उम्र, लिंग, आर्थिक स्थिति, उत्पादक उपभोक्ता के आधार पर बने भेदभाव के सभी कानून समाप्त कर दिये जायें।
10. रामचन्दरपुर , बलरामपुर, वाड्रफनगर विकास खण्डों को टैक्स फ्री जोन घोषित किया जाय।
11. सभी प्रकार के सरकारीकरण को समाप्त कर दिया जाय तथा निजीकरण को प्रोत्साहित किया जाय।

छब्बीस तारीख का विषय था " भारत की वर्तमान राजनैतिक समीक्षा। मैंने विचार रखा कि पिछले साठ वर्षो से भारत लगातार राजनैतिक पतन की दिशा में जा रहा था। भ्रष्टाचार बढ़ रहा था। व्यवस्था टूट कर सत्ता के सूत्र व्यक्ति के पास सिमट रहे थे। समाजवाद पूंजीवाद पर हावी था। मनमोहन सिंह की सरकार भी अल्पमत में होने से कुछ नहीं कर पा रही थी। तभी लोक सभा चुनावों में भारत की जनता ने एकाएक राजनीति की दिशा बदल दी। मनमोहन सिंह सोनिया गांधी का ग्रुप केन्द्रीय सत्ता में उभर कर आया। यह ग्रुप कांग्रेस के नाम पर आगे न आकर व्यक्तिगत आधार पर आगे आया। प्रादेशिक राजनीति में भी कांग्रेस या भाजपा के नाम पर मतदान न होकर व्यक्तिगत छवि के आधार पर मतदान हुआ। छत्तीसगढ़ में रमणसिंह और गुजरात में नरेन्द्र मोदी मजबूत हुए तो राजस्थान में ठीक विपरीत हुआ। बिहार में नितिश कुमार मजबूत हुए। दल के रूप में सिर्फ साम्यवादी दल को ही जनता ने नकारा। पूरे भारत में साम्यवाद, वामपंथ को करारा झटका लगा। बुद्धदेव भट्टाचार्य जैसा व्यक्ति भी वामपंथ के विपरीत चली आंधी में बह गया।

मैंने समीक्षा करके बताया कि अब राजनीति व्यक्ति के केन्द्र से निकलकर व्यवस्था को केन्द्र बना रही हैं। भ्रष्टाचार के नये नये घोटाले खुल रहे हैं। अब भ्रष्टाचार व्यक्तियों के दबाने से दब नहीं रहा। क्योंकि व्यवस्था मजबूत हो रही हैं तात्कालिक रूप से राजनीति की दिशा ठीक है। मेरा प्रस्ताव है कि हम दलगत राजनीति से उपर उठकर अच्छे लोगों के हाथ मजबूत करें चाहे वे किसी भी दल के क्यों न हों। मेरा सुझाव है कि मनमोहन सिंह, सोनिया गांधी, चिदम्बरम् नरेन्द्र मोदी, रमणसिंह, शान्ताकुमार, नितिश कुमार, शिवराज सिंह चौहान, बुद्धदेव भट्टाचार्य, अच्युतानन्दन, नवीन पटनायक, बाबूलाल मरान्डी जैसे अपेक्षाकृत अधिक अच्छे लोगों का मनोबल बढ़ावें तथा लालू प्रसाद, रामबिलास पासवान, अजीत जोगी, मायावती, मुलायम सिंह, शिबू सोरेन, जयललिता, करूणानिधि, ममता बनर्जी प्रकाश करात, स्वामी अग्निवेश जैसे अपेक्षाकृत अधिक बुरे लोगों का मनोबल गिरावें। इस प्रस्ताव पर गरमा गर्म बहस हुई। महाराष्ट्र के लोगों ने पृथ्वीराज चहवाण तथा ए0के0 एन्टोनी का नाम अच्छे लोगों की सूची में डालने की इच्छा व्यक्त की जिसे चर्चा के बाद मैंने मान लिया। कुछ लोगों ने ममता बनर्जी का नाम बुरे

लोगों की सूची से हटाने की बात कहीं तो कुछ ने नक्सलवाद के प्रति उनकी नीति और विशेषकर नक्सलवादी रेल दुर्घटना में उनकी भूमिका को बिल्कुल गलत बताया। कुछ लोगों ने दिग्विजय सिंह का नाम बुरे लोगों की सूची में डालना चाहा तो मैंने स्पष्ट किया कि यघपि दिग्विजय सिंह उस सूची की दिशा में लगातार बढ़ते जा रहे हैं किन्तु अब तक यह साफ नहीं है कि वे राहुल गांधी के इशारे पर उधर जा रहे हैं या दिग्विजय सिंह के इशारें पर राहुल गांधी गलत दिशा में जा रहे हैं। एक बात और है कि पंचायती राज की दिशा में दिग्विजय सिंह का रेकार्ड बहुत अच्छा रहा है। अतः इतनी जल्दबाजी करना ठीक नहीं। इस प्रश्न पर चर्चा अधूरी रही।

राजनैतिक चर्चा में मैंने दूसरा विषय रखा कि भारतीय राजनीति का दीर्घकालिक समाधान लोक स्वराज्य प्रणाली ही हैं। लोकतंत्र विकृत होकर असफल हो चुका हैं। अब इस मरी हुई लाश को दफनाकर लोक स्वराज्य के पौधे को मजबूत करना ही उचित है। लोक स्वराज्य के लिये ग्राम सभा सशक्तिकरण ही एक मात्र समाधान हैं। ग्राम सभाओं को उपर से भी सशक्त कराया जाय। नीचे से ग्राम सभा सशक्तिकरण अभियान एक सौ तीस गांवों से शुरू किया गया हैं। उसी तरह हम यह प्रस्ताव पारित करें कि हमारी सरकार ग्राम सभाओं को अधिक से अधिक विधायी अधिकार दे। कई साथियों ने प्रशासनिक अधिकार और विधायी अधिकार का अन्तर जानना चाहा तो मैंने अन्तर स्पष्ट करते हुए बताया कि आज तक हमारी किसी भी केन्द्रीय या प्रादेशिक सरकार ने ग्राम सभाओं को एक भी विधायी अधिकार नहीं दिया है। संसद या विधान सभा ग्राम सभा को जो भी अधिकार देती हैं और वापस ले सकती है वे विधायी अधिकार न होकर मात्र कार्यपालिक ही होते हैं। किन्तु जिन अधिकारों को संसद या विधान सभाएं भी बिना ग्राम सभा की मर्जी के वापस न ले सकें वे विधायी अधिकार होते हैं। आचार्य पंकज जी ने बताया कि राजस्थान सरकार ने दो अक्टूबर दस से पांच अधिकार ग्राम सभाओं को दिये हैं जो विधायी हैं। अन्य किसी व्यक्ति द्वारा पुष्टि के अभाव में उक्त जानकारी को अभी पुष्ट करना आवश्यक माना गया। लम्बी चर्चा के बाद उक्त प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुआ।

सताईस तारीख को भारत की आर्थिक स्थिति पर चर्चा हुई। मैंने चार प्रस्तावों पर विस्तृत चर्चा रखी (1)रामचन्द्रपुर, बलरामपुर, वाड्रफनगर विकास खंड सम्पूर्ण भारत में बहुत पिछड़े हुए इलाके माने जाते है। ये विकास खंड नैतिक आधार पर तो भारत के विकसित क्षेत्रों की श्रेणी में शामिल हैं किन्तु आर्थिक तथा भौतिक आधार पर देश के अन्य भागों से पीछे हैं। ऐसे पिछड़े क्षेत्रों से कई प्रकार के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कर वसूलना एक प्रकार का अन्याय ही है। सरकारें हमारे सब प्रकार के उपभोग तथा उत्पादन पर कर वसूलती है। कई बार तो हमारे उत्पादन का अधिकतम मूल्य तक निर्धारित कर दिया जाता है। जैसे पिछले वर्ष में कोई किसान सरकारी मूल्य से अधिक पर अपना गन्ना स्वतंत्रता पूर्वक नहीं बेच सकता था। बड़ी मात्रा में हमसे अप्रत्यक्ष धन वसूलकर थोड़ी सी सब्सीडी देना और उपर से वाहवाही लूटना अच्छी बात नहीं है। हमारा पहला प्रस्ताव है कि हमारे व्यक्तिगत उत्पादन और उपयोग की सभी वस्तुओं को पांच वर्ष तक के लिये कर मुक्त करके फ्री टैक्स जोन घोषित किया जावे। यदि टैक्स लेना मजबूरी हो तो उक्त वसूल किया गया टैक्स हिसाब करके ग्राम सभाओं को आबादी के अनुसार दे दिया जावे। इस प्रस्ताव पर व्यापक चर्चा हुई क्योंकि कई लोग तो यह जानते ही नहीं थे कि ग्रामीण उत्पादन पर भी कोई टैक्स है। कई लोगों का कहना था कि शासन अधिकतम मूल्य तो

तय नहीं करता है भले ही न्यूनतम मूल्य तय करें। मैंने सब बातें उन्हें समझाई तब उन्हें पता चला कि शासन किस प्रकार की चालबाजी करता है।

मैंने दूसरा प्रस्ताव रखा कि शासन प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिमाह दो हजार रूपया जीवन भत्ता देना शुरू कर दे। यह धन कृत्रिम उर्जा पर भारी कर लगाकर जनता से वसूल करे। प्रारंभ में गरीबी रेखा से नीचे के लोगों से यह धन देना शुरू कर दे। अन्य सब प्रकार की सब्सीडी बन्द कर दें। इस तरह आर्थिक विषमता भी कम हो जायेगी तथा खास बात यह होगी कि कृत्रिम उर्जा की मूल्य वृद्धि बेरोजगारी दूर कर सकती हैं। इससे श्रम की मांग बढ़ेगी, विदेशों से डीजल पेट्रोल का आयात बन्द भी हो सकता है, सौर उर्जा गोबर गैस आदि का उत्पादन बढ़ेगा, बिजली का उत्पादन बढ़ेगा?, पर्यावरण प्रदूषण घटेगा, फैक्ट्री उत्पादन बढ़ेगा जिससे हमारा निर्यात बढ़ेगा तथा विदेशी मुद्रा का संकट भी समाप्त हो जायेगा। रोशन लाल जी ने प्रस्ताव का समर्थन किया किन्तु शंका प्रकट की कि कृत्रिम उर्जा की मूल्य वृद्धि से उत्पादन लागत बढ़ जायेगी और उत्पादन पर बुरा असर पड़ सकता है। मैंने बताया कि उत्पादन लागत बढ़ने से निर्यात महंगा हो सकता है जिसे निर्यात कर घटाकर ठीक कर लेंगे किन्तु इससे उत्पादन कई गुना बढ़ जायेगा क्योंकि हमारे पास अतिरिक्त उर्जा उपलब्ध होगी। मेरा तो कहना था कि भारत की सभी आर्थिक समस्याओं का एक ही समाधान है "कृत्रिम उर्जा की बहुत भारी मूल्य वृद्धि"। राजनैतिक नजरिये से यह वृद्धि घातक होगी किन्तु यदि दो हजार रूपया प्रतिमाह प्रति व्यक्ति दे दिया जाय तो जनता इस मूल्य वृद्धि का स्वागत करेगी। व्यवस्था परिवर्तन मंच ने इस योजना का पूरा पूरा समर्थन किया।

मेरा तीसरा प्रस्ताव था कि एक स्वतंत्र अर्थ पालिका हो जिसे न्यायपालिका विधायिका तथा कार्यपालिका के समान ही संवैधानिक मान्यता प्राप्त हो। इसका अर्थ हुआ कि वर्तमान में राज्य को अर्थ व्यवस्था के संबंध में जो स्वतंत्रता प्राप्त है वह नियंत्रित हो जायेगी। उपस्थित विद्वानों ने इस प्रस्ताव का पूरा पूरा समर्थन किया। इस प्रस्ताव पर ज्यादा बहस की जरूरत ही नहीं पड़ी।

मैंने आर्थिक स्थिति की चर्चा में चौथा प्रस्ताव रखा कि हम सब प्रकार के सरकारीकरण का विरोध करते हैं क्योंकि सरकारीकरण भ्रष्टाचार बढ़ाता है, राज्य पर अनावश्यक बोझ है, सुरक्षा और न्याय को कमजोर करता है तथा समाज के सामाजिक कार्यो में हस्तक्षेप करके उसे गुलाम बनाता हैं। सरकारीकरण का सबसे अच्छा विकल्प तो समाजीकरण ही है किन्तु जब तक समाजीकरण न हो तब तक निजीकरण या बाजारीकरण का समर्थन करना चाहिये। हम यह ध्यान रखें कि निजीकरण या बाजारीकरण का विरोध अप्रत्यक्ष रूप से सरकारीकरण का समर्थन ही होता है। अतः हमें चाहिये कि हम राष्ट्रीयकरण या सरकारीकरण के विरूद्ध निजीकरण का पूरा पूरा समर्थन करें। श्री जयकिशन जी धनवाद ने इस प्रस्ताव का जोरदार समर्थन किया। कुछ साथियों ने समाजीकरण पर प्रश्न पूछे जिसे समझाने का प्रयास किया गया। प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुआ।

इस प्रकार आर्थिक स्थिति की समीक्षा के बाद उपरोक्त चार प्रस्ताव पारित हुए जो सर्व सम्मत थे।

चौथे दिन अठाइस तारीख को सामाजिक स्थिति की व्यापक समीक्षा हुई। मैंने पहला प्रस्ताव रखा कि भारत में समान आचार संहिता की कोशिशें बन्द करके समान नागरिक संहिता

लागू की जाय। तत्काल ही प्रश्न उठा कि दोनों में अन्तर क्या है तो मैंने समझाया कि व्यक्ति के व्यक्तिगत अधिकार आचार संहिता माने जाते हैं और संवैधानिक अधिकार नागरिक संहिता के अन्तर्गत आते हैं। इस प्रश्न को मैंने बहुत विस्तृत रूप से समझाया। उसके बाद महिला आरक्षण की बात उठी तो उसके भी व्यापक दुष्परिणामों की चर्चा हुई। मेरा मत था कि भारत को एक सौ पचीस करोड़ व्यक्तियों का देश होना चाहिये, धर्मो, जातियों लिंगों का संघ नहीं। प्रत्येक व्यक्ति को धर्म जाति भाषा की पूरी पूरी स्वतंत्रता हो और राज्य इनमें किसी प्रकार का कोई हस्तक्षेप न करे।

मैंने दूसरा सामाजिक प्रस्ताव रखा कि राजनीति नैतिक पतन की कीमत पर भौतिक उन्नति को ही सामाजिक उन्नति का मापदण्ड मानकर आगे बढ़ रही है तो धर्म गुणात्मक विकास के प्रचार प्रसार की कीमत पर धार्मिक संगठनों को सशक्त करने के प्रयास में लगा हुआ हैं राजनीति और धर्म समाज को निरंतर कमजोर करने का प्रयास कर रहे हैं। समाज को चाहिये कि वह राजनीति और धर्म के उपर वरीयता प्राप्त करें। यह प्रस्ताव रामकष्ण जी पौराणिक उज्जैन ने रखा और विभिन्न प्रश्नों के उत्तर भी उन्होंने दिये। प्रस्ताव बिल्कुल स्पष्ट था तथा विरोध की स्थिति नहीं थी किन्तु धर्म, राजनीति और समाज की अलग अलग भूमिका पर कुछ चर्चा हुई और प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ।

उन्तीस तारीख को पहले सत्र में मेरे व्यक्तिगत जीवन पर चर्चा हुई जिसका शीर्षक था व्यक्तित्व और कृत्रित्व। प्रारंभ में मुझे सम्मानित किया गया। मेरे आग्रह पर श्री रोशन लाल जी तथा श्री केशव चौबे जी मेरे साथ मंच पर बैठे। श्री विमलेश सिन्हा ने मेरे जीवन की अनेक घटनाओं की चर्चा की तो श्री रामसेवक गुप्त जी ने मेरे स्वभाव तथा कार्य शैली की चर्चा की। आनन्द गुप्त ने मेरे राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय चिन्तन और निष्कर्षो की चर्चा की। सबका मानना था कि बजरंग मुनि जी की क्षमता का अब तक व्यापक आकलन नहीं किया गया। आनन्द गुप्त ने कहा कि मेरे कई निष्कर्ष तो विश्व स्तरीय परीक्षण योग्य है किन्तु वे वर्तमान कोलाहल पूर्ण वातावरण में उपर नहीं आ सके क्योंकि उन विचारों को व्यापक प्रचार नहीं मिल सका। वक्ताओं ने इस संबंध में मुझे भी दोषी बताया कि मैंने सदा स्वयं को प्रचार माध्यमों से दूर रखा तथा स्वयं को अन्डर एस्टीमेट किया। मैंने इन आलोचनाओं को स्वीकार किया और बताया कि दो हजार नौ तक मैं स्वयं किसी अन्तिम निष्कर्ष तक नहीं पहुँच सका था। इसलिये किसी आहवान की भूमिका नहीं थी दूसरी बात यह भी थी कि मेरे एक दो साथी हमेशा ही मुझे निर्णायक संघर्ष में जाने से भटकाते रहते थे। अब कार्य विभाजन हो जाने से भटकाव की स्थिति नहीं रही। अब मेरी भूमिका ज्ञान यज्ञ परिवार के साथ सीमित हो रही है तथा वे साथी लोक स्वराज्य संघ तक सीमित हो गये हैं। अब कोई समस्या नहीं रहेगी।

तीस तारीख को संगठनात्मक चर्चा होनी थी। सबसे पहले मैंने स्पष्ट किया कि ज्ञान यज्ञ परिवार तीन कार्य करता हैः—

(1) ग्राम सभा सशक्तिकरण अभियान के माध्यम से नई समाज रचना।
(2) ज्ञान तत्व तथा ज्ञान कथाओं के माध्यम से स्वतंत्र विचार मंथन।
(3) लोक स्वराज्य की दिशा में सक्रिय संस्थाओं या संगठनों की सहायता।

ग्राम सभा सशक्तिकरण के माध्यम से नई समाज रचना का कार्य एक सौ तीस गावों में चल रहा है। ज्ञान यज्ञ परिवार के संरक्षक के रूप में मैं स्वयं इस कार्य को देख रहा हूँ।

अभियान के प्रमुख अवधेश गुप्त जी अधिवक्ता निरंतर सक्रिय हैं। ज्ञान यज्ञ परिवार की इच्छा है कि इन गावों में लोक स्वराज्य हो, भ्रष्टाचार रूके, हिंसा बन्द हो, वर्ग विद्वेष वर्ग समन्वय में बदले तथा यहॉ के नागरिक गुणात्मक श्रेष्ठता के साथ साथ भौतिक प्रगति की दिशा में भी आगे बढ़े।

हमारा दूसरा लक्ष्य है कि ज्ञान तत्व पाक्षिक के माध्यम से स्वतंत्र विचार मंथन लगातार बढ़ता रहे। ज्ञान तत्व की संख्या वर्तमान में साढ़े तीन हजार से बढ़ाकर दस हजार की जावे चाहे वह सशुल्क हो अथवा निःशुल्क। सबने इस अपील पर गंभीर आश्वासन दिया। ज्ञान तत्व की चर्चा की स्वतंत्रता कायम रहनी चाहिये। भिन्न विचारों के भिन्न संगठनों के लोग एक साथ बैठकर विचार मंथन की आदत डालें तो अनेक टकराव स्वयं ही समाप्त हो सकते हैं। बिभिन्न संगठनों के पदाधिकारी नहीं चाहते कि उनके बेड़े के लोग दूसरे बेड़े के सम्पर्क में आवें। यही कारण है कि ऐसे बेड़ों के प्रमुख विचार मंथन करने की अपेक्षा मेरा विरोध करते हैं। उनमें उत्तर देने की तो हिम्मत नहीं है, इसलिये अपने घेरे में धिरे लोगों को रोकना उनकी आदत है। साम्यवादी और मानवाधिकारवादी तो थक गये है किन्तु सर्वोदयी और संघ परिवार के कुछ प्रमुख लोग अब भी बहुत चिन्तित हैं। किन्तु हमारा कर्तव्य है कि हम उनकी मजबूरी को समझें। कुछ दिनों में वे स्वयं ही समझ जावेंगे। हम और तेजी से ज्ञान तत्व का विस्तार करें।

मैंने बताया कि काश इन्डिया डाट काम वेव साइट का भी व्यापक उपयोग संभव है। इस वेव साइट में सभी ज्ञान तत्व डाले जा रहे हैं। आप पुराने ज्ञान तत्व भी पढ़ सकते हैं। वेव साईट में विचारों की इमेल के माध्यम से प्रश्नोत्तर भी किया जा सकता है। वेव साइट तथा इमेल बहुत सहायक होगा।

ज्ञान यज्ञ परिवार का चुनाव सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष के रूप में रामकृष्ण जी पौराणिक तथा उपाध्यक्ष के रूप में वर्तमान सूची ठीक है। सचिव के लिये रामभूषण जी फतेहपुर का नाम आया जिसे सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया। रामभूषण जी एक फरवरी से इस कार्य में लगेंगे तथा कम से कम छः माह का समय देंगे ही। अनिल जी रीवा वाले ने भी समय देने का वचन दिया है। यह हमारी एक विशेष उपलब्धि रही है।

लोक स्वराज्य संघ तथा व्यवस्था परिवर्तन मंच के कार्यो में ज्ञान यज्ञ परिवार पूरा पूरा सहयोग करेगा। ये दोनों संगठन अपने अपने कार्यक्रम स्वतंत्र रूप से तय करेंगे। ज्ञान यज्ञ परिवार के लोग उसमें बाहर से सहायता करेंगे। यदि कोई सदस्य उन संगठनों से जुड़ना भी चाहे तो यह उसकी स्वतंत्रता होगी। ज्ञान यज्ञ परिवार ट्रस्ट इन दोनों संगठनों की आर्थिक सहायता भी कर सकेगा। लोक स्वराज्य संघ के उद्देश्य तथा संगठनात्मक ढांचे पर अध्यक्ष दुर्गा प्रसाद जी आर्य ने विस्तृत प्रकाश डाला। अविनाश भाई वाराणसी वालों ने लोक स्वराज्य संघ के माध्यम से एक सौ तीस गावों में ग्राम स्वराज्य खड़ा करने की घोषणा की। एक अप्रैल से एक माह तक वे इन गावों का दौरा करेंगे।

सम्पूर्ण भारत में व्यवस्था परिवर्तन मंच तीन मुद्दों पर जनमत जागृत करेगा जिसका क्रम इस प्रकार होगा (1) लोक स्वराज्य (2) जीवन भत्ता(3) राइट टू रिकाल। आचार्य पंकज जी ने व्यवस्था परिवर्तन मंच की विस्तृत योजना और संगठनात्मक ढांचे पर चर्चा रखी।

मैंने ज्ञान यज्ञ परिवार ट्रस्ट की भी विस्तृत रूपरेखा रखी जिसका उद्देश्य एक स्वतंत्र अर्थपालिका की स्थापना है। ट्रस्ट का काम ठीक ढंग से चल रहा है। अभी प्रारंभिक सदस्यों के अतिरिक्त पांच अन्य दाता सदस्य जुड़े हैं। पचीस लाख रूपया अब भी मेरे पास सुरक्षित है। कुल

तीस हजार रूपया महिना आता हैं। यह सब खर्च होता हैं। अतिरिक्त खर्च की और व्यवस्था होती है। सर्व सम्मति से ट्रस्ट का कार्य इसी तरह अगली बैठक तक करते रहने की स्वीकृति दी गई। साथ ही यह भी विचार हुआ कि ट्रस्ट की कुछ सदस्य संख्या बढ़ाई जावे।

किसी भी संस्था या संगठन की प्राथमिकताएँ होती है और उन्हीं के आधार पर कार्यक्रम होते हैं। ये प्राथमिकताएँ आठ प्रकार की हैं (1) सहभागिता (2) सहयोग (3)समर्थन (4)प्रशंसा (5)समीक्षा (6)आलोचना(7)विरोध(8)संघर्ष। ज्ञान यज्ञ परिवार के कार्यकर्ताओं को भी इन प्राथमिकताओं को समझना चाहिये। ज्ञान यज्ञ परिवार संस्था के रूप में सिर्फ ग्राम सभा सशक्तिकरण अभियान के माध्यम से नई समाज रचना का काम कर रहा है। अन्य कोई काम ज्ञान यज्ञ परिवार नहीं कर रहा है। इस तरह ग्राम सभा सशक्तिकरण में ज्ञान यज्ञ परिवार की सहभागिता होगी। लोक स्वराज्य संघ और व्यवस्था परिवर्तन मंच लोक स्वराज्य को पहली प्राथमिकता घोषित करके सक्रिय है। ज्ञान यज्ञ परिवार इन दोनों संगठनों का सहयोग करेगा। किन्तु सहभागिता नहीं होगी। जो संगठन भ्रष्टाचार, कृत्रिम उर्जा मूल्य वृद्धि, जातीय धार्मिक आरक्षण विरोध महिला आरक्षण विरोध, साम्प्रदायिकता विरोध आदि में तो सक्रिय हों किन्तु उनकी मांग या आंदोलन में लोक स्वराज्य न जुड़ा हो ऐसे संगठनों की हम व्यक्तिगत रूप से समर्थन या प्रशंसा करें। जो व्यक्ति राजनीति में अपेक्षाकृत इमानदार और विश्वसनीय दिखते हैं उनका समर्थन या प्रशंसा तथा जो राजनीति में अपेक्षाकृत भ्रष्ट या अविश्वसनीय दिखते है उनकी आलोचना करें। इनमें दो स्पष्ट गुट बनाने का प्रयास करें जैसी राजनीतिक प्रस्ताव में अधूरी चर्चा हुई भी है। बाबा रामदेव के प्रयत्नों की प्रशंसा कर सकते हैं। साम्यवाद राजनैतिक केन्द्रीयकरण का प्रबल समर्थक होने से आलोचना या विरोध का पात्र है। जो लोग निजीकरण के विरूद्ध सरकारीकरण के समर्थक है उनकी भी आलोचना या विरोध करें। जो व्यक्ति या संगठन अकेन्द्रीयकरण या सत्ता के विकेन्द्रीयकरण के विरूद्ध हैं तथा पंचायत व्यवस्था को बदनाम करते हों उनका भी विरोध करना चाहिये। अन्य सभी संगठनों या संस्थाओं की गुण दोष के आधार पर समीक्षा करें। हम चाहे किसी भी संस्था या संगठन में रहें किन्तु हम यह ध्यान रखे कि उस स्थान पर हमारी अपनी विश्वसनीयता घटे नहीं। हम हर जगह यथार्थ को महत्व देने की कोशिश करें। अभी हम किसी भी मामले में संघर्ष की जरूरत नहीं समझते है। ज्ञान यज्ञ परिवार संस्था के रूप में संघर्ष से अभी अलग है। उपरोक्त प्रस्ताव पर भी चर्चा पूरी नहीं हुई। फिर भी इसे आम तौर पर गाइड लाइन के रूप में विचारणीय माना गया।

इकतीस तारीख को प्रातः काल ग्यारह बजे एक सौ तीस गावों से आये ग्राम देवताओं (ग्राम प्रमुखों) का परिचय हुआ। फिर उनके कार्य और भूमिका पर विस्तृत चर्चा हुई। उसके बाद क्षेत्र प्रमुख का चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें सर्व सम्मति से श्री देवेन्द्र प्रसाद गुप्त चुन लिये गये।

दोपहर एक बजे से गांधी मैदान में एक बड़ी आम सभा सम्पन्न हुई। आम सभा में करीब पंद्रह सौ लोग शामिल थे जो एक सौ तीस गावों तथा शहर का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। सर्व प्रथम अपने नव निर्वाचित क्षेत्र प्रमुख श्री देवेन्द्र गुप्त को सम्मानित किया गया तथा हमारे ग्राम सभा सशक्तिकरण अभियान के अध्यक्ष श्री अवधेश गुप्त ने उनके सम्मान में स्वागत गीत प्रस्तुत किया। उसके बाद मैंने अपने भाषण में कहा कि आज सम्पूर्ण भारत की राजनैतिक स्थिति ऐसी है कि राजनीति और धर्म ने समाज को गुलाम बना लिया हैं। गाय की रोटी कुत्ता खा रहा है और कुत्ता लगातार मजबूत हो रहा है जबकि गाय कमजोर। अब तो कुत्ते को विश्वास हो गया

है कि गाय अब मरणासन्न हैं। इसलिये अब कुत्ते गाय को नोच खाने के एकाधिकार के लिये आपस में ही लड़ रहे हैं जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण है विभिन्न राजनैतिक दलों द्वारा चौक चौक पर एक दूसरे का अनावश्यक पुतला दहन। धर्म से उम्मीद थी कि वह समाज को दिशा देगा किन्तु धर्म भी समाज को मरणासन्न देखकर चील कौए के समान उसे नोच खाने की छीना झपटी में लगा है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण है धर्म के नाम पर बिभिन्न संगठनों का एक दूसरे के विरूद्ध आपसी संघर्ष। अब ज्ञान यज्ञ परिवार मैदान में है जिससे कि राजनीति और धर्म ऐसी प्रतीक्षा न करें। अब गाय एक सौ तीस गांवों और रामानुजगंज शहर में मैदान में डटकर खड़ी हो गई है।

सभा को उत्तरांचल सरकार के प्रतिनिधि श्री विजयशंकर जी शुक्ल ने भी संबोधित करते हुए बताया कि अब केन्द्र सरकार भी ग्राम सभाओं को अधिक अधिकार देने के विषय में सोच रही है। छत्तीसगढ़ सरकार की ओर से पंचायत मंत्री रामविचार जी नेताम समय पूर्व आ जाने से सम्बोधित नहीं कर सके और उनका प्रतिनिधित्व उनकी ओर से अधिकृत अधिवक्ता राम कृष्ण जी पटेल ने किया। उन्होंने आश्वासन दिया कि छत्तीसगढ़ सरकार ग्राम सभा सशक्तिकरण की इस सामाजिक पहल का पूरा पूरा समर्थन करती है। हरियाणा सरकार के पुलिस महानिरीक्षक श्री रणवीर शर्मा ने भी कहा कि ऐसा अभियान पूरे भारत में प्रारंभ होना चाहिये। व्यवस्था परिवर्तन मंच के प्रतिनिधि आचार्य पंकज ने भी पूरी सक्रियता तथा समर्थन की घोषणा की। लोक स्वराज्य संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष दुर्गा प्रसाद जी आर्य ने बताया कि उनका संगठन इन एक सौ तीस गांवों में एक अप्रील से लोक स्वराज्य के लिये अभियान शुरू करेगा जिसका संचालन अविनाश भाई वाराणसी वाले करेंगे। सभा को ज्ञान यज्ञ परिवार के नव नियुक्त महासचिव रामभूषण सिंह जी ने भी संबोधित करते हुए सबका धन्यवाद ज्ञापन किया।

दिनांक एक जनवरी को समीक्षा बैठक हुई जिसका संचालन दिल्ली से पधारे आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान ब्रम्हचारी राजसिंह जी आर्य ने किया। सर्व प्रथम हमारे अध्यक्ष अवधेश गुप्त जी ने राजसिंह जी का स्वागत किया। मैंने कहा कि ज्ञान यज्ञ परिवार सम्पूर्ण भारत की एक मात्र ऐसी संस्था है जो लोक स्वराज्य के साथ साथ नई समाज रचना की दिशा में सक्रिय है। वैसे तो सम्पूर्ण विश्व में लोक स्वराज्य की दिशा में इतना स्पष्ट काम करने वाला यह पहला संगठन है किन्तु यदि हम विश्व की बात छोड़ भी दें तो भारत में तो यह अकेला है ही। ज्ञान यज्ञ परिवार जिस नई समाज रचना पर काम कर रहा है उसमें गांधी विनोबा जयप्रकाश का लोक स्वराज्य स्वामी दयानन्द का वर्ग समन्वय तथा स्वामी रामदेव जी की भ्रष्टाचार मुक्ति की छटपटाहट का सम्मिश्रण हैं। इन तीनों को एक साथ किये बिना न आर्य समाज सफल हो सका न जयप्रकाश जी हो सके और न रामदेव जी हो सकेंगे क्योंकि जय प्रकाश जी ने वर्ग समन्वय को किनारे करके दो मुद्दे लिये थे और रामदेव जी ने तो लोक स्वराज्य को भी किनारे कर दिया है और वर्ग समन्वय को भी। यह संभव ही नहीं है कि किसी एक मुद्दे पर सफलता मिले किन्तु यदि रामदेव जी सफल हो तो मेरी शुभकामनाएँ उनके साथ हैं।

ज्ञान यज्ञ परिवार ने एक सौ तीस गावों से लोक स्वराज्य, वर्ग समन्वय और भ्रष्टाचार मुक्ति का अभियान शुरू किया है जिसके परीक्षण की अवधि एक वर्ष है। एक वर्ष बाद पचीस दिसम्बर को सफलता असफलता का प्रारंभिक आकलन होगा और आगे की नीति बनेगी। हम इन गावों में नई समाज रचना का काम करने जा रहे हैं जिसमें ज्ञान यज्ञ परिवार पूरी शक्ति से लगेगा। ग्राम सभा सशक्तिकरण इस नई समाज रचना का एक सवोत्तम मार्ग है। इससे लोक

स्वराज्य भी आ सकेगा तथा वर्ग विद्वेष भी घटेगा। इससे भ्रष्टाचार पर भी अंकुश लगेगा। हम अपने सम्पूर्ण प्रयत्नों में अहिंसक ही होंगे क्योंकि हिंसा करना हमारा काम न होकर शासन का काम है। हम अपराधियों के हृदय परिवर्तन का प्रयास करेंगे और जानबुझकर अपराध करने वालों के विरूद्ध बल प्रयोग के लिये राज्य से अपेक्षा करेंगे। यदि राज्य सुरक्षा और न्याय के कार्य को छोड़ कर अनावश्यक कार्यो को प्राथमिकता देगा तो हम राज्य को नीति परिवर्तन के लिये सहमत करेंगे। हम किसी भी रूप में संवैधानिक व्यवस्था के विरूद्ध आंदोलन की आवश्यकता नहीं समझते क्योंकि संविधान संशोधन की संवैधानिक व्यवस्था भी संविधान में दी ही गई है। हम एक सौ तीस गावों में संविधान द्वारा दी गई ग्राम सभा व्यवस्था को मजबूत करेंगे। ब्रम्हचारी राजसिंह ने हमारे इस प्रयत्न की भूरि भूरि प्रशंसा की और सहयोग का आश्वासन दिया।

शाम चार बजे समापन यज्ञ हुआ। यज्ञ पश्चात् ध्वज वंदना हुई तथा अध्यक्ष जी ने ध्वज उतार कर सम्मेलन समाप्त घोषित कर दिया।

हम लोगों ने प्रत्येक गांव में एक ग्राम देवता का चयन किया था। साथ ही प्रत्येक गांव में न्यूनतम पंद्रह लोगों की लोक पंचायत का गठन किया था जिसके तीन काम होंगे (1) ग्राम सभा सशक्तिकरण (2) वर्ग विद्वेष को वर्ग समन्वय में बदलना तथा (3) गांव के पंच सरपंच सचिव का भ्रष्टाचार शून्य करना। ग्राम देवता की किसी कार्य में कोई भूमिका नहीं होगी किन्तु ग्राम देवता लोक पंचायत के कार्यो की गुप्त रूप से समीक्षा करेगा तथा आवश्यकता पड़ने पर ब्लाक प्रमुख को जानकारी देगा। स्थानीय स्तर पर सम्पूर्ण सक्रियता लोक पंचायत की होगी। लोक पंचायत की सक्रियता भी मुख्य रूप से उपर लिखे तीन कार्यो में ही होगी। हम लोगों ने बारह नवंबर से चौदह दिसम्बर तक पचहत्तर गांवों में ही यह गठन किया। शेष गावों में करना अभी शेष है जो फरवारी माह में करेंगे। हमने इन गावों में भ्रमण और सर्वेक्षण के लिये अपने बाहर से आये विद्वानों को पचीस तारीख से उन्तीस तारीख तक स्वतंत्र रूप से भेजा। सर्वेक्षण टीम किसी भी गांव में किसी तरह के सर्वे के लिये स्वतंत्र थी। यह टीम आकर जो रिपोर्ट देगी उस आधार पर आदर्श गांव का चयन किया जायेगा तथा उस गांव को इक्तीस तारीख को सम्मानित करते हुए लोक पंचायत को प्रथम को दस हजार रूपया, द्वितीय को पांच हजार, तृतीय को तीन हजार तथा चतुर्थ को एक हजार रूपया देना था। प्रतिदिन दो या तीन गाड़ियों में सर्वे टीमें अलग अलग दिशाओं में गई तथा निर्णय अनुसार लोधा गांव को प्रथम, त्रिशुली गांव को द्वितीय, बसेरा गांव को तृतीय तथा सिन्दूर गांव को चौथा पुरस्कार दिया गया। अगले वर्ष के सर्वेक्षण में इन चार गावों को पुरस्कार से बाहर रखा जायेगा या दिया हुआ पुरस्कार कम करके दिया जायेगा। पुरस्कार राशि लोक पंचायत के सदस्यों की व्यक्तिगत होगी।

पचीस दिसम्बर से इक्तीस दिसम्बर तक प्रतिदिन शाम दो घंटे का नाटक " एक ही रास्ता" दिखाया गया। नाटक की रूपरेखा मेरी बनाई हुई तथा भाषा रामप्यारें रसिक जी की थी। प्रस्तुति नाटक कार आनन्द गुप्त की थी। नाटक में एक घंटे तक स्थानीय स्कूलों के बच्चे विभिन्न प्रस्तुतियॉ देते थे तथा एक घंटे तक नाटक प्रस्तुत होता था। नाटक का सात दिनों का संक्षिप्त यह था।

एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पंद्रह अगस्त सैंतालिस को अपने लड़के को देश का नेतृत्व देता है। नेता योजना बनाता है कि किस प्रकार देश को भी आगे बढ़ाया जाये तथा अपनी सात पीढ़ी तक सम्पन्न और सुखी कर लें। नेता समाज को जाति, धर्म, उम्र, लिंग आदि के आधार

पर वर्गों में बांटकर वर्ग विद्वेष की योजना बनाता हैं। नेता उधोगपति को आश्वासन देता है कि कृत्रिम उर्जा को सस्ता करके वह बड़े उघोगों का विस्तार करेगा तथा लघु उघोगों को छूट दे देकर अपनी मौत मरने देगा। वह अपराध नियंत्रण की जगह जन कल्याण को प्राथमिकता देगा।

नेता खूब धन कमाता है, देश को भी आगे ले जाता है और खूब सम्मान भी पाता हैं। नेता महंगाई का भ्रम फैलाता हैं। महिलाओं को पुरूषों के विरूद्ध खड़ा करता है तथा गरीबों को भी उकसाता है। साठ वर्षो में नेता बूढ़ा होकर अपने बेटे को गद्दी बिठाता है तब उसके पिताजी की आत्मा अपने नाती के शरीर में आकर अपने बेटे से पूछती है कि उसने क्या किया। बाप बेटे में संवाद होता है और नाती घोषित करता है कि वह अपने पिता की लाइन छोड़कर दादा की लाइन पर चलेगा जो लोक स्वराज्य, वर्ग समन्वय, निजीकरण की लाइन है। दर्शकों ने "राजनीति बन गई तवायफ नेता हुए दलाल" शीर्षक गीत की बहुत प्रशंसा की। अन्य गीत भी गाये गये जो एक से बढ़कर एक थे।

ज्ञान तत्व पर चर्चा में स्पष्ट हुआ कि ज्ञान तत्व का पूर्वार्ध न ज्ञान यज्ञ परिवार के विचार हैं न लोक स्वराज्य संघ के। वे विचार मेरे व्यक्तिगत हैं। वे परिवार या संघ के विपरीत भी हो सकते हैं। ज्ञान तत्व का उत्तरार्ध ज्ञान यज्ञ परिवार तथा अन्य संगठनों की गतिविधियों के लिये है। पाठक पूर्वार्ध को समीक्षा तक समझे, न कि संदेश के लिये।

एक सप्ताह के इस कार्यक्रम में हमारी एक सौ विद्वानों तक की व्यवस्था थी। किन्तु बाहर के दूर दूर से आये विद्वानों की उपस्थिति साठ तक हो पाई। इसके तीन कारण प्रमुख थे (1) इन्हीं दिनों में गोविन्दाचार्य जी का सम्मेलन का होना (2) राजस्थान की ट्रेनों का परिचालन बन्द हो जाना (3) अपने लोक स्वराज्य संघ के दो प्रमुख साथियों का विरोध। पहले कारण से दस साथी और दूसरे से भी दस साथी नहीं आ सके। तीसरे कारण से बीस साथी कम हुए। मैं नहीं कह सकता कि गल्ती कहॉ हुई किन्तु हमारे ही साथियों ने जिस तरह लोक स्वराज्य संघ के लोगों को फोन किये उसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। फिर भी लोक स्वराज्य संघ के अध्यक्ष दुर्गा प्रसाद जी तथा कुछ अन्य साथी आये। अब तो लोक स्वराज्य संघ ने अविनाश भाई के मार्ग दर्शन में इन गांवों में अभियान चलाने की घोषणा ही कर दी है। संभव है कि हमारे ज्ञान यज्ञ परिवार से नाराज साथी भी इस दिशा में लगेंगे। यह बात अवश्य है कि दुबे जी तथा ईश्वरदयाल जी पहले दिल्ली कार्यालय का संचालन करते थे। अब दिल्ली कार्यालय की व्यवस्था सुरेश जी देख रहे हैं। सुरेश जी ज्ञान यज्ञ परिवार से जुड़े हैं जबकि दुबे जी ईश्वरदयाल जी ज्ञान यज्ञ परिवार से न पहले कभी जुड़े रहे हैं न अब हैं। वे लोक स्वराज्य संघ के हैं। ज्ञान यज्ञ परिवार का कोई साथी पिछले कई वर्षो से नाराज नहीं हुआ है। लोक स्वराज्य संघ की गुटबन्दी से ज्ञान यज्ञ परिवार अछूता है। महावीर सिंह जी ने अवश्य ज्ञान यज्ञ परिवार छोड़कर लोक स्वराज्य संघ के दुबे जी के गुट से जुड़ने की सूचना दी है जिन्हें हम मना लेंगे। वैसे तो मुझे विश्वास है कि लोक स्वराज्य संघ का दुबे जी ईश्वर दयाल जी का गुट भी समझेगा और मान ही जायेगा। इतना अवश्य है कि यदि मेरी स्वतंत्र लेखनी पर कोई अंकुश लगाने का प्रयास करेगा तो मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मैं दूसरों की स्वतंत्रता का सम्मान करना जानता हूँ और अपनी स्वतंत्रता की भी पूरी पूरी सुरक्षा करूँगा चाहे इसके लिये दुबे जी ईश्वर दयाल जी माने या न माने। वैसे मुझे अब भी विश्वास है कि प्रत्यक्ष मिलने पर भ्रम दूर हो जायेगा।

ग्राम सशक्तिकरण अभियान 25/12/10 से 1/1/11 रामानुजगंज छ0ग0

1	हरिश चंद्र भाई अवस्थी, सपना प्रकाशन मार्ग, चेतगीरि कालोनी, छतरपुर, म0प्र0 471001	8085145076
2	प्रमोद वात्सल्य, सी –1, गंगा वाटिका, ऋषिकेश उत्तराखंड 249201	0135–2438743
3	जय किशन, इन्द्रदेव भवन कब्रिस्तान रोड जौड़ा फाटक, धनबाद 826001	9430703788
4	कृष्ण लाल रूगटा,उपर बाजार, पो0 चिरकुण्डा, जिला– धनबाद, बिहार 828202	06504 273003
5	अविनाश चंद्र, प्र0 सर्व सेवा संघ परिवार, राजघाट, वाराणसी उ0प्र0 221001	9454220239
6	आचार्य पंकज, पो0 बा0 न0 33, ऋषिकेश, उत्तराखंड	
7	राजेश कुमार सिसोदिया, समाज सेवा, गाजियाबाद उ0प्र0	9410053746
8	छबील सिंह सिसोदिया, शाहपुर फगौत, गाजियाबाद, उ0प्र02	9760459770
9	डा0 गंगा प्रसाद गुप्ता, चेंतगीरि कालोनी, बार्ड –40, मजार बडा कुआ के पास, छत्तर पुर 471001	9993270703
10	निलेश चौबे, ग्राम व पो. देउरगांव, तह. साजा जिला दुर्ग,(छ.ग.)491993	9329007559
11	महेन्द्र सिंह,शाहपुर फागौत, गाजियाबाद (उ.प्र.)	9917186552
12	दीपक बिलसूरकर, श्रीवत्स समता नगर, उदगीर 493516	9823624877
13	अनिल आजाद, ग्राम +पो गोदरीं 27, जिला–रिवा, म0 प्र0	9009213370
14	बैधराज आहुजा,शहीद चन्द्रशेखर, आनन्द होटल, भानुप्रताप पुर कांकेर छ0ग0	7850252241
15	रामभूशण सिंह, ग्राम व पो0 दावतपुर, जनपद–फतेहपुर, उ0प्र0	
16	श्री ममि उर्मिला गुप्ता, छततरपुर, शान्ति नगर 67262	
17	सौ0 मंगला दी0 बलसूरकर श्रीवत्स समता नगर उदगीर जिला लातूर महाराष्ट 493416	9823624877
18	दुर्गेश कुमार दुबे, कान्ति कुटिर, वैधन टोला, उपरहटी, रीवा म0प्र0	9907153554, 9424983001
19	रामकृष्ण पौराणीक, 10/8 अलखनंदा नगर, उज्जैन, म0 प्र0 456070	9406625456
20	श्री मनि मंगला शिमादो, जिरीज सह जीवन सोसायटी, शोहाक रोड उदगीर, जिला लातुर महा0 413517	2385256749
21	गंगाधर घुमाणे, गिरीजा सह जीवन सोसायटी, मु0 पो0 ता0 उदगीर, जिला लातुर, महाराष्ट 413517	2385256749
22	श्री राम फूरू शास्त्री, नेवाजीपुर, जंगीगंज,भदोही, उत्तर प्रदेश	9696532582
23	रोशन लाल अग्रवाल, नेभीचंद्र गली, रायपुर 492001	9302224440
24	राम राज आर्य दयानंद, नगर दौडियाही जंगी गंज, भदोही, 221310	9005020544
25	विजय नाथ आर्य, मंत्री आर्य समाज, संगीगंज स.र.न. भदोही, उ0 प्र0	9453785132
26	अशोक त्रिपाठी, बडी गैवी,वाराणसी, उ0प्र0	
27	कन्हैया लाल, बहदा नगर, जंगीगंज, भदोही, उ0प्र0	
28	पारस नाथ मि्श्र, धनीपुर, जंगीगंज, भदोही, उ0प्र0	
29	यस नारायण कुशवाहा, दौरियाही, जंगीगंज, भदोही, उ0प्र0	
30	कमल मिश्र धनीपुर, जंगीगंज, भदोही, उ0प्र0	
31	मुन्नी बाई कहार, मु0पो0जिला – अनुपपुर, चेतनागंज वार्ड न0–14, अनुपपुर, म0प्र0 484224	9826193702
32	गंगा प्रसाद गुप्ता, मु0 पो0 बदरा, जिला अनुपपुर, म0 प्र0 484224	9826342705
33	सीताराम शर्मा, मु0 पो0– जिला–अनुपपुर, चेतनागंज, वार्ड न0 –14, म0प्र0	9575387803
34	वेवी कहार, मु0पो0 जिला–अनुपपुर, जिला अनुपपुर, म0प्र0 484224	
35	आचार्य सोमप्रताप गहलौत, 1554/4 सी–सी शताब्दी नगर, गंगोंल रोड, मेरठ, उ0प्र0 250103	9837455467
36	डा0 विजय शंकर शुक्ल, 32, विष्णु लोक रामपुर,देहरादुन, उत्तराखंड	9412004956
37	रविन्द्र मोहन, पावर हाउस रोड, गांवतडग शाहजादपुर, माजरा नारायणगढ, अम्बाला134202	9496038101
38	पो0साधु शरण सिंह, सुमन राष्ट्रीय सहसंयोजक ,रा0उ0शि0 स0 अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र, बाढ़, जिला–पटना, बिहार	9334133708
39	डा0 हीरालाल श्रीमाली, अणुव्रत राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक, संसद, राजसमंद, राजस्थान	9414928380

40	श्री मति उर्मिला गुप्ता, मु0पां0 यो0 जिला–रीवा, उप रहटी प्रधान टोला,रीवा, म0प्र0	9300153667
41	सीताराम शर्मा, मु0 पो0 जिला अनुपपुर, शंकर मंदिर के पास, पुराना डिवीजन	9575387803
42	आकाश कहार, मू0पो0 जिला–अनुपपुर, म0प्र0 484224	
43	दानी कहार, मू0 पो0 जिला– अनुपपुर म0 प्र0	
44	वर्स्त कहार, मू0 पो0 जिला–अनुपपुर म0 प्र0	
45	कटकू कहार, मू0 पो0 जिला– अनूपपूर म0 प्र0	
46	गंगा प्रसाद गुप्ता, मु0 पो0 बदरा, जिला–अनुपपुर म0 प्र0 484224	917990565
47	रामचंद्र कहार, मु0पां0 जिला–अनुपपुर म0 प्र0	
48	शिव रतन कहार, मु0पां0 जिला–अनुपपुर म0 प्र0	
49	सुनील कहार, मु0 पो0 जिला–अनुपपुर म0 प्र0	
50	किरण कहार, मु0 पो0 जिला–अनुपपुर म0 प्र0	9576372705
51	लाला कहार, मु0 पो0 अनुपपुर, म0 प्र0 484224	9425186717
52	शिवानी कहार, मू0 पो0 जिला–अनुपपुर म0 प्र0 484224	9530458011
53	किरन गडारी, मु0 पो0 जिला–अनुपपुर म0 प्र0 484224	
54	संध्या कहार ,मू0 पो0 जिला–अनुपपुर म0 प्र0 484224	
55	पुजा कहार, मू0 पो0 जिला–अनुपपुर म0 प्र0 484224	
56	रणवीर शर्मा, आई.पी.एस,आई0जी0पुलिस हरियाणा, अर्बन इस्टेटकोठी न0–1172से0–13 करनाल(हरि0)9416035656,	01842206566
57	राजेन्द्र सिंह सिसौदिया, नंगला काशी, द्वारा कंवर पाल सिंह, गाजियाबाद उ0 प्र0	
58	कंवर पाल सिंह, नंगला काशी, गाजियाबाद उ0 प्र0	
59	दुर्गा प्रसाद आर्य, अध्यक्ष लोक स्वराज्य, ग्राम पो0 चरीचर कला, जिला–टिकमगढ म0प्र0 472445	9893125987
60	प्रिंस अभिशेख अज्ञानी, फ 34/1 तायाटोपे नगर,राममन्दिर समीप,भोपाल–462003(मध्यप्रदेश)	9826422820
61	जगदीश श्रीवास्तव, ईडण्स्यूएस,89तारा होटल सामने,कोटरा सुल्तानाबाद,भोपाल(मध्यप्रदेश)462003	9425669815
62	गौरव शर्मा, डी–504नेहरू नगर (कोटरा सुल्तानबाद) भोपाल(मध्यप्रदेश)–462003	
63	अर्पित अनाम, अनामालय, पंजलासा, नारायणगढ़,जिला –अम्बाला (हरियाणा) –134203	9896038101
64	दुर्गा प्रसाद आर्य ग्राम पो0 तरिचर कला जिला टिकम गढ म0 प्र0 472445	9893125987
65.	श्रुतिवंतु दुबे, बिजुन ग्राम +पो0 डगा बरगवां जिला सिगरौली म0 प्र0 486886	9179212185
66	आचार्य राज सिंह आर्य, 366 गली रोबीन सिनेमा पुरानी सब्जी मंण्डी, दिल्ली 110007 09350077858,	01123858912
67	विनोद पाल सिंह चौहान, फलैट –40–1 /स्मृति नगर, भिलाई छ0ग0	9425244798
68	श्याम सुन्दर तिवारी, 446 पश्चिम मंगलवार पेठ, टेलीफोन भवन के सामने, सोलापुर महाराष्ट	